नं. ४२

A FINGER-POINTING

Why the need arose to sign a treaty forbidding the use of Nuclear and Chemical weapons ? Hasn't their very invention prompted that need ? What prompted their inventions ? It was the feelings of revenge, envy and malice which provoked their inventions. If the feeling of retaliation does not take place, will there be any need of an agreement ? Certainly not. Then, it is necessary to know how the inspiration to retaliate discends on human mind and gets implanted. For this a finger-pointing, to the best of our ability, is done in 'Streaming From The Invisible'. This booklet is a synonym of an humble effort to see to it that this significant aspect is not missed out by the one who contemplates on World Peace.

YOGBHIKSHU

This Book is in Hindi, English & Gujarati.

Available At :
S. S. Bhikshu
1/A, Paliadnagar, Naranpura, Ahmedabad.

અંગુલી નિર્દેશ

અણુ-પરમાણુ અને રાસાયણિક મહાવિનાશક શસ્ત્રો નહિ વાપરવાના કરાર કરવાની જરૂરત કેમ પડી ? તે શોધાયા તેથી ને ? તે શોધાયા શાથી ? વેર, ઈર્ષા, દ્વેષ વગેરેની બદલાની ભાવનાથી પ્રેરાઈને. બદલાની ભાવના જ ન ઉઠે તો સંધિ કરારની જરૂરત પડે ? ન જ પડે. તો, આને માટે, એ સમજવું જરૂરી છે કે બદલાની ભાવનાની પ્રેરણા કયાંથી ઉતરે છે ? તે ભાવના મગજમાં કયાંથી રોપાય છે ? આનો યથાશક્તિ અંગુલી નિર્દેશ **'નિર્ઝર ઝર્યું કો ગેબથી'**માં કરવામાં આવ્યો છે. આ દિશામાં પણ વિચારવાનું ચૂકી ન જવાય તે માટેનો એક નમ્ર પ્રયત્ન એટલે જ **'નિર્ઝર ઝર્યું કો ગેબથી'** નામની પુસ્તિકા.

યોગભિક્ષુ

આ પુસ્તિકા ગુજરાતી, હિન્દી તેમજ અંગ્રેજીમાં પણ છે.

પ્રાપ્તિસ્થાન :-
ડૉ. સ. સ. ભિક્ષુ
૧/અ, પલિયડનગર, સેંટ ઝેવીયર્સ સ્કુલ રોડ.
નારણપુરા, અમદાવાદ-૧૩.
ફોન : ૪૪૫૧૯૫

अंगूलि-निर्देश

अणु-परमाणु और रासायणिक महाविनाशक शस्त्रों का उपयेाग नहि करने का करार करने की आवश्यकता क्यों पडी ? उसकी खेाज हुई असलिये न ? उसकी खेाज कैसे हुई ? वेर, इर्षा, द्वेश इत्यादि की प्रतिशेाध की भावना से प्रेरित हेाकर । प्रतिशेाध की यह भावना ही न उठे तेा संधि करार की आवश्यकता पडेगी ? कभी नहि पडेगी । तेा, इसके लिये यह समझना जरूरी है कि प्रतिशेाध की भावना का जन्म कहाँ से हेाता है ? यह भावना दिमाग में कहाँ से बोयी जाती है ? इसका अंगूलि-निर्देश "निर्झर झरा के गेब से" नामक पुस्तिका में किया गया है । असि दिशा में भी सेाचना रह न जाय असि लिये किया गया अेक नम्र प्रयत्न असी का नाम "निर्झर झरा के गेब से" नामक पुस्तिका ।

— येागभिक्षु

यह पुस्तिका हिंदी, अंग्रेजी और गुजराती भाषामें है

प्राप्तिस्थान :

डेा. स. स. भिक्षु
४, पलियडनगर सेासायटी,
सेंट झेवियर्स स्कूल रेाड,
नारणपुरा, अहमदाबाद-१३.
फेान : ४४५१९५

आशिष–अभिप्राय

"निर्झर झरा का गेबसे" पुस्तिका को (अति संक्षिप्त)

१. इंग्लेन्ड के प्राइमिनिस्टर :

पत्र और साहित्य मिला, आभार।

२. श्री स्टीफन आर. रीड (अमरिका) :

(मेयर : हेरिसबर्ग, पी.अे.)

"निर्झर झरा को गेब से" पुस्तिका को हम "सीटी आरकीव्झ" पुस्तकाल्य के सदस्यों द्वारा, उनके अपने भविष्य के उपयोग के लिये, इसी पुस्तकाल्य का अेक अंग बना रहे हैं। आभार।

३. कु. मिर्टल सोलेमन, प्रमुख : W.R.I.

(युद्ध विरोधि विश्व संघ)

इस पुस्तिका के लिए बोल उठी कि वन्डरफूल! (अद्भूत!)

४. प.पू. आचार्य विजयभानु चंद्रसुरीजी(अहमदाबाद)

इस पुस्तिका को पढकर जैसे आंतर चक्षुने दिव्यता प्राप्त कि हो ऐसा लगता है।

५. प.पू. प्रमुख स्वामिजी महाराज (अहमदाबाद) :

भगवान स्वामिनारायणने भी इसी सिध्धांतो प्रतिपादन किया है। वास्तव में आपने इस पुस्तिका द्वारा विश्व अशांति के अति गुप्त कारणों का मौलिक प्रकटीकरण कीया है।

६. श्री मणीभाई पटेल (श्री संतबाल आश्रम) :
वर्तमान युग में ऐसा साहित्य बहुत उपयोगी होगा। इस पुस्तिका को हम रात्रि को समुह प्रार्थना में पढने के लिये रखेंगे जीससे बहुतों को लाभ मिले।

७. प. पू. श्री ज्ञानचंद्रजी महाराज (साणंद) :
आपकी पुस्तिका मीली। आनंद अभिव्यक्त करता हूं।

८. पूज्य श्री ओमूमाँ (डुम्मस) :
यह पुस्तिका सत्यम् शिवम् सुंदरम् की पराकाष्टा है।

९. श्र.श्री मनुभाई पंडीत [अहमदाबाद] :
(सहतंत्री : "विश्व वात्सल्य")
'निर्झर झरा को गेवसे' पुस्तिका में उपनिषद के ऋषि जैसी वाणी सुनने को मिलती है।

१०. श्र. श्री श्रेणीकभाई कस्तूरभाई शेठ [अहमदाबाद] :
आपकी पुस्तिका मीली, आभार।

११. श्र.श्री डॉ. सुरेश झवेरी (अहमदाबाद) :
(मंत्री : अ. भा. हिं. नी. संघ)
ऐसी उत्तम पुस्तिका कि जो सुक्ष्म बुध्धि द्वारा ही ग्राह्य हो सकती है उसे, अधिक कार्यबोझ के समय पढना ठीक नही। चित्त जब पूर्ण शांत होगा तब इस पुस्तिका का चिंतन मनन करूंगा।

१२. श्र.श्री यशोधर महेता [अहमदाबाद] :
आपके विचार काफी व्यापक और तलस्पर्शी है। अधिकतः सुप्रजन विद्या की ओर मेरा ध्यान अधिक आकृष्ट हुआ। अभिनंदन।

१३. श्र. श्री ललीत महेता [जुनागढ] :
"निर्झर झरा..." पुस्तिका एक बैठक में ही पढ ली। जानी हुइ बात होने पर भी आपके द्वारा कही जाने से इसी बात का विशिष्ट प्रभाव हो गया है।

१४. श्र. श्री ठक्करभाई वणझारा [डचका] :
(मंत्री : जनकल्याण युवक मंडल)
यह पुस्तिका श्री रोनाल्ड रेगन को सप्रेम भेट देने योग्य है। इस पुस्तिका में अणुशस्त्रों को पिघलानेवाला रसायण है।

१५. श्र. श्री रमेश पाठक [हलवद] :
आपने सच्चा संतकर्म अदा किया है। इस अमूल्य पुस्तिका का प्रदान करके आपने विश्वशांतिवर्ष के उत्सव मनाने की पहल की है।